विचार बिन्दु

हम यहाँ किसी विशेष कारण से हैं। इसीलिए अपने भूत का कैदी बनना छोड़िये। अपने भविष्य के निर्माता बनिए। –रोबिन शर्मा

त्योहार पर खाद्य पदार्थों में मिलावट का खतरा ज्यादा

त्योहार खुशियों का पैगाम लेकर आते हैं। दीपावली, होली, नवरात्रा, दशहरा पर बाजार मिठाइयों और पकवानों से सज जाते हैं। लोग दिल खोलकर खरीदारी करते हैं।त्योहारों का मौसम नजदीक आते ही खाद्य पदार्थों में मिलावट का खतरा तेजी से बढ़ जाता हैइस दौरान खाने-पीने की चीज़ों की डिमांड तेजी से बढ़ जाती है। बाजार में दूध, घी और मावे से बनी मिठाईयां जोरों शोरों से बिक्री होती हैं। इनकी बढ़ती मांग की वजह से मिलावट और तेजी से होने लगी है। सिर्फ दूध और मावा में ही नहीं बल्कि कई चीज़ों में मिलावट किया जा रहा है। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक पनीर में सोयाबीन पाउडर की मिलावट, मावा में कुट्टू का आटा, मिठाई पर लगने वाले सिल्वर वर्क में एल्यूमिनियम तो गोलगप्पे का स्वाद बढ़ाने के लिए टॉयलेट क्लीनर का इस्तेमाल होने लगा है। देशका सबसे बडा त्योहार दीपावली 8 अक्टूबर को है। दीपावली को पंच पर्वों का त्योहार कहा जाता है जो धनतेरस से शुरू होकर भाई दूज पर समाप्त होते हैं। इस दौरान मावा, पनीर, घी, दूध, तेल और मसालों की मांग कई गुना बढ जाती है। कई व्यापारी ज्यादा प्रॉफिट कमाने के चक्कर में उसमें मिलावट करने से भी नहीं हिचकते। खाद्य विभाग सदा की तरह मिलावटियों की धरपकड का अभियान चलाते है। नमूने एकत्र किये जाते है। प्रदूषित सामग्री नष्ट भी की जाती है। मगर यह कार्यवाही ऊंट के मुंह में जीरे के सामान है। सच तो यह है सिर्फ सरकार के भरोसे यह लडाई नहीं जीती जा सकती। उपभोक्ता को भी जागरूक होना होगा। दीपावली पर गरीब और अमीर सभी वर्ग के लोग अपने सामर्थ्य के अनुरूप घर की साफ सफाई, नए कपड़, सोने चांदी के सामान के साथ मिठाइयां बनाने और खरीदने में व्यस्त हो जाते है। इस दौरान घर घर में मीठे पकवान बनते है। होटलों पर मिठाइयां सज्ज जाती है। त्योहारी सीजन शुरू होते ही मिलावटिये भी सक्रीय होकर आमजन के स्वास्थ्य से खिलवाड करते है। दीपावली से पहले देश में खाद्य पदार्थों में मिलावटखोरी एक गंभीर समस्या बनी हुई है। मिलावट और त्योहार का लगता है चोली दामन का साथ हो गया है। विशेषकर उत्तर भारत के राज्यों ने शुद्ध के लिए युद्ध अभियान का आगाज कर दिया है। प्रतिदिन मिलावटी मावा, पनीर, दूषित मिठाइयां, खाद्य सामग्री और खराब सूखे मेवे बहुत बडी संख्यां में पकडे जा रहे है। मगर 'तूं डाल डाल और मैं पात पात' के मुहावरे को चरितार्थ करते हुए मिलावटियों के हौसले भी बुलंद हो रहे है। मिलावट खोरी रोकने के लिए जिम्मेदार एजेंसियां अभियान भी चलाती हैं और बडे पैमाने पर मिलावटी खाद्य पदार्थ जब्त किए जाते हैं। मगर लगता है सरकारी कार्यवाही के बावजूद मिलावट खोरी पर इस अभियान का कोई खास असर दिखाई नहीं देता है। मिलावट खोरों को पकडने के लिए सरकारी संसाधन पर्याप्त नहीं है। मिलावटिये गली गली और नगर नगर में सक्रीय होकर आम आदमी की सेहत को खराब करने में जुटे है मगर इनको पकडने वाली टीमें काफी कम संख्या में होने के कारण शुद्ध के लिए युद्ध अभियान अपने लक्ष्य को हासिल नहीं कर पा रहा है।

मिलावट खोरी रोकने के लिए जिम्मेदार एजेंसियां अभियान भी चलाती हैं और बड़े पैमाने पर मिलावटी खाद्य पदार्थ जब्त किए जाते हैं। मगर लगता है सरकारी कार्यवाही के बावजूद मिलावट खोरी पर इस अभियान का कोई खास असर दिखाई नहीं देता है। मिलावट खोरों को पकड़ने के लिए सरकारी संसाधन पर्याप्त नहीं है। मिलावटिये गली गली और नगर नगर में सक्रीय होकर आम आदमी की सेहत को खराब करने में जुटे है मगर इनको पकड़ने वाली टीमें काफी कम संख्या में होने के कारण 'शुद्ध के लिए युद्ध' अभियान अपने लक्ष्य को हासिल नहीं कर पा रहा है।

त्योहारी सीजन शुरू होने के साथ ही सोने से रसोई तक मिलावटखोर भी सक्रिय हो जाते हैं। हर चीज में मिलावट जैसे आम बात हो गई है। मिठाई के बिना त्योहार अधूरा है। त्योहार आये और मिठाई न खाये यह हो ही नहीं सकता। त्योहारी सीजन शुरू होते ही बाजार में ग्राहकी बढने लगती है। मिठाई त्योहारों की खुशी को दुगना कर देती है। मिलावटखोर भी इसी इंतजार में रहते है। उनकी दुकाने रंग बिरंगी मिठाइयों से सज जाती है और हम बिना जांचे परखे इन मिठाइयों को खरीद कर ले आते है। मिलावटखोर अधिक मुनाफे के चक्कर में धड़ल्ले से अपना मिलावटी सामान बेचते देर नहीं लगाते। मिलावटखोरों को नियम-कानून का भी भय नहीं रह गया। खासकर त्योहार के सीजन में तो इनकी पौ-बारह रहती है।

खाद्य पदार्थों में अशुद्ध, सस्ती अथवा अनावश्यक वस्तुओं के मिश्रण को मिलावट कहते हैं। आज समाज में हर तरफ मिलावट ही मिलावट देखने को मिल रही है। पानी से सोने तक मिलावट के बाजार ने हमारी बुनियाद को हिला कर रख दिया है। पहले केवल दूध में पानी और शुद्ध देशी घी में वनस्पति घी की मिलावट की बात सुनी जाती थी, मगर आज घर-घर में प्रत्येक वस्तु में मिलावट देखने और सुनने को मिल रही है। मिलावट का अर्थ प्राकृतिक तत्त्वों और पदार्थों में बाहरी, बनावटी या दूसरे प्रकार के मिश्रण से है।

मुनाफाखोरी करने वाले लोग रातोंरात धनवान बनने का सपना देखते हैं। अपना यह सपना साकार करने के लिए वे बिना सोचे-समझे मिलावट का सहारा लेते हैं। सस्ती चीजों का मिश्रण कर सामान को मिलावटी कर महंगे दामों में बेचकर लोगों को न केवल धोखा दिया जाता है, बल्कि हमारे स्वास्थ्य के साथ खिलवाड भी किया जाता है। सत्य तो यह है कि हम जो भी पदार्थ सेवन कर रहे हैं चाहें वे खाद्य पदार्थ हो या दूसरे, सब में मिलावट ही मिलावट हो रही है। दूध, मावा, घी, हल्दी, मिर्च, धनिया, अमचूर, सब्जियां, फल आदि सभी मिलावट की चपेट में है। आज खाने पीने सहित सभी चीजों में धड़ले से मिलावट हो रही है। ऐसा कोई भोज्य पदार्थ नहीं है, जो जहरीले कीटनाशकों और मिलावटों से मुक्त हो। बाजार में पपीता, आम और केला, सेव अनार जैसे फलों को कैल्शियम कार्बाईड की मदद से पकाया जाता है। चिकित्सकों के अनुसार यह स्वास्थ्य के लिए काफी हानिकारक है।

हमारे देश में मिलावट करने को एक गंभीर अपराध माना गया है। मिलावट साबित होने पर भारतीय दण्ड संहिता की धारा 272 के तहत अपराधी को आजीवन कारावास की सजा का प्रावधान है। मगर बहुत कम मामलों में सजा और जुर्माना हो पाता है। मिलावटी खाद्य पदार्थों के सेवन से आदमी अनेक प्रकार की बीमारियों का शिकार हो जाता है। पेट की असाध्य बीमारियों से लेकर कैंसर तक का रोग लग जाता है। अंधापन और अपंगता को भी झेलना पडता है। मिलावट साबित होने कई बार छोटे-मोटे मिलावटखोरों की पकड-धकड़ के समाचार अवश्य पढने और सुनने को मिल जाते हैं मगर मिलावट का थोक व्यापार करने वाले लोग अब तक कानून की पहुंच से दूर हैं।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 7 नवम्बर, 2026



पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत-2083, चित्रा नक्षत्र रविवार प्रात: 5:53 तक, प्रीति योग रात्रि 3:28 तक, वणिज करण दिन 10:48 तक, चन्द्रमा आज सायं 5:15 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति– सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-तुला, गुरू-कर्क, शुक्र-कन्या, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 5:53 से सूर्योदय तक है। आज धनवन्तरी जयन्ती है। आज नरक और रूप चतुरदशी निमित्त सायं दीपदान और आगामी अरुणोदयकाल में प्रभात स्नान और दीपदान है। चन्द्रोदय प्रात: 5:41 पर होगा। आज मास शिवरात्रि, हनुमान जयन्ती, पदम प्रभु जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया– शुभ 8:06 से 9:37 तक, चर 12:14 से 1:32 तक, लाभ-अमृत 1:32 से 4:15 तक।

राहुकाल– 9:00 से 10:30 तक, सूर्योदय 6:44, सूर्यास्त 5:36



मेष

व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। परिवार में शुभ-धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



सिंह

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



धनु

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। आज परिवार में शुभ संदेश प्राप्त हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



वृष

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



कन्या

स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



मकर

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।



मिथुन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा संभव है। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।



तुला

आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। आज खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



कुंभ

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



कर्क

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।



वृश्चिक

घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



मीन

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कारणों से मन में असंतोष बना रहेगा। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

बीकानेर की माटी में रचा गया सांप्रदायिक सद्भाव का अनूठा दस्तावेज़ : उर्दू रामायण

दीपावली के अवसर पर होता है उर्दू रामायण का वाचन



राजेन्द्र जोशी

थार मरुस्थल की गोद में बसे बीकानेर की पहचान केवल अपने ऐतिहासिक वैभव, स्थापत्य कला और सांस्कृतिक विरासत तक सीमित नहीं है। यह शहर सदियों से आपसी प्रेम, भाईचारे और सांप्रदायिक सद्भाव की मिसाल भी रहा है। इसी साझा संस्कृति और उदार सामाजिक चेतना का एक विलक्षण उदाहरण वर्ष 1936 में सामने आया, जब बीकानेर में कार्यरत मौलवी बादशाह हुसैन खां राना ने उर्दू में रामायण की रचना की। यह रचना केवल साहित्यिक उपलब्धि नहीं थी, बल्कि भारतीय संस्कृति की साझी विरासत और धार्मिक सहिष्णुता का ऐसा दस्तावेज़ बनी, जिसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

लखनऊ निवासी मौलवी बादशाह हुसैन खां राना वर्ष 1913 में बीकानेर आए थे। वे फारसी भाषा के विद्वान थे। बीकानेर के अभिलेखागार में मुगल शासकों के फरमानों का फारसी से उर्दू में अनुवाद करने का महत्वपूर्ण दायित्व उन्हें महाराजा गंगासिंह ने सौंपा था। उनके कार्य और विद्वत्ता से प्रभावित होकर बीकानेर रियासत ने उन्हें लखनऊ वापस जाने से रोक लिया और डूंगर कॉलेज में उर्दू-फारसी के मौलवी पद पर नियुक्त किया। वे वर्ष 1919 से 1943 तक डूंगर कॉलेज में अपनी सेवाएं देते रहे।

उर्दू में रामायण की रचना का प्रसंग भी बेहद रोचक है। वर्ष 1936 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय ने तुलसीदास जयंती के अवसर पर उर्दू में रामायण नज़्म लिखने की अखिल भारतीय प्रतियोगिता आयोजित की थी। बीकानेर में उस समय मौलवी बादशाह हुसैन खां राना का संपर्क मोहम्मद उस्मान आरिफ, गाजी साहब, गोविंद नारायण व्यास, इस्माईल साहब सहित उनके शागिर्द थे । इन्हीं शागिर्दों के बीच एक कश्मीरी पंडित ने उन्हें इस प्रतियोगिता की जानकारी दी और उर्दू में रामायण लिखने का आग्रह किया।

दिलचस्प बात यह थी कि मौलवी साहब ने तब तक रामायण पढ़ी नहीं थी। उन्हें अवधी भाषा का ज्ञान भी नहीं था। मित्रों के आठाह पर उन्होंने पहले रामायण का अध्ययन किया, उसे सुना और उसके भावों को आत्मसात किया। इसके बाद उन्होंने रामकथा को उर्दू की नज़्म के रूप में अभिव्यक्त किया। इस रचना में उन्होंने रामायण के प्रसंगों, पात्रों की संवेदनाओं और घटनाओं को उर्दू की काव्यात्मक भाषा में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उनकी रचना का स्वरूप मुसद्दस शैली का था, जिसमें प्रत्येक बंद में 6-6 पंक्तियां बताई जाती हैं। बीकानेर की साहित्यिक और सांस्कृतिक भूमि पर रची गई इस उर्दू रामायण को बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की प्रतियोगिता में पूरे देश में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। विश्वविद्यालय ने मौलवी बादशाह हुसैन खां राना को गोल्ड मेडल से सम्मानित किया। इस उपलब्धि का महत्व इसलिए भी विशेष था कि एक मुस्लिम विद्वान ने हिंदू धर्म के महाकाव्य रामायण को उर्दू जैसी भाषा में काव्यबद्ध कर सांस्कृतिक एकता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। महाराजा गंगासिंह ने इस उपलब्धि पर नागरी भंडार में एक समारोह आयोजित कर राना साहब से उर्दू रामायण का वाचन करवाया। इसी अवसर पर बनारस से आए वरिष्ठ साहित्यकार सर तेज बहादुर सप्रू ने विश्वविद्यालय की ओर से उन्हें गोल्ड मेडल प्रदान किया। यह आयोजन बीकानेर की गंगा-जमुनी तहजीब और साहित्य के प्रति तत्कालीन राजपरिवार के सम्मान का भी परिचायक था।

इस उर्दू रामायण का साहित्यिक सफर भी उल्लेखनीय रहा है। वर्ष 1999 में बीकानेर के उर्दू के लेखक खुर्शीद साहब ने अपनी पुस्तक शीरो-सकर में इसे प्रकाशित किया। वर्ष 1967 में नागरी भंडार की स्मारिका में भी इसका प्रकाशन हुआ। राजतंत्र के समय यह रचना कक्षा आठ के पाठ्यक्रम में शामिल रही और बाद में लोकतांत्रिक व्यवस्था में कक्षा बारहवीं बोर्ड के ऊर्दू पाठ्यक्रम तक पहुंची। इस तरह उर्दू रामायण ने साहित्य के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। जाकिर हुसैन कॉलेज, दिल्ली की प्रोफेसर डॉ. मुकुल चतुर्वेदी ने इसका अंग्रेजी अनुवाद भी किया है।

इस ऐतिहासिक रचना की परंपरा को जीवित रखने का महत्वपूर्ण कार्य पर्यटन लेखक संघ एवं महफिले अदब द्वारा किया जा रहा है। वर्ष 2012 से लगातार दीपावली के अवसर पर, विशेषकर धनतेरस के आसपास, उर्दू रामायण का सार्वजनिक वाचन आयोजित किया जाता रहा है। इस आयोजन में डॉ. जिया उल हसन कादरी, असद अली असद और जाकिर अदीब उर्दू साइड का प्रभावशाली वाचन करते हैं। श्रोता इस नज़्म को बड़े चाव से सुनते हैं और कई बार विशेष पंक्तियों को दोबारा सुनाने का आठाह भी करते हैं। हाल ही में हुए वाचन में सीता के विरह और युद्ध के प्रसंगों को विशेष सराहना मिली। सीता की मनोदशा को व्यक्त करती ये पंक्तियां संवेदना की गहराई को सामने रखती हैं-

रंजो हसरत की घटा सीता के दिल पर छा गई,
गोया जूही की कली थी, ओस से मुरझा गई।

इसी तरह लंका युद्ध के दृश्य का चित्रण करते हुए रचनाकार लिखते हैं-

थोड़े दिन में जंग के भी साजो-सामां हो गए,
खून से रंगीन सब कोह-ओ-बियाबां हो गए।
ये भी कुछ जख्मी हुए, कुछ वो भी बेजान हो गए,
कत्ल-ए-रावण के सब आसार अब नुमायां हो गए।

आगे हनुमान और लंका दहन के प्रसंग को जिस काव्यात्मक अंदाज में प्रस्तुत किया गया है, वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है-

देखने को जाहिरा हनुमान जी की चल गई,
वरना सीता की ये आहें थीं कि लंका जल गई।

इन पंक्तियों में उर्दू की रवानी, भावों की गहराई और रामकथा की आत्मा का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

डॉ. जिया उल हसन कादरी का मानना है कि राम तोड़ने का नहीं, जोड़ने का नाम है। इसी विचार को केंद्र में रखकर वे और उनके साथी वर्षों से उर्दू रामायण के वाचन की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। वास्तव में यह आयोजन केवल किसी साहित्यिक रचना का पाठ नहीं है, बल्कि समाज को अपनी साझा सांस्कृतिक विरासत की याद दिलाने का एक सार्थक प्रयास है।

बीकानेर का इतिहास इस सद्भाव की परंपरा का साक्षी रहा है। 1488 में स्थापित यह शहर अपनी 538 वर्षों की यात्रा में सामाजिक सौहार्द की विशिष्ट पहचान बनाए हुए है। यहां की सामाजिक चेतना, विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच आत्मीय संबंध और सांस्कृतिक गतिविधियों में साझा भागीदारी ने इस परंपरा को मजबूत किया है। बीकानेर के इतिहास में सांप्रदायिक कर्फ्यू की स्थिति का न आना भी शहर की इस विशिष्ट सामाजिक पहचान के रूप में अक्सर रेखांकित किया जाता है। यहां के शासकों ने भी समय-समय पर सामाजिक सद्भाव बनाए रखने के प्रयास किए।

यह समझना आवश्यक है कि सांप्रदायिक सद्भाव किसी एक दिन में पैदा नहीं होता और न ही केवल भाषणों या नारों से कायम रह सकता है। इसके लिए पीढ़ियों तक विकसित होने वाली आपसी समझ, विश्वास, प्रेम और सांस्कृतिक सहभागिता की आवश्यकता होती है। जब एक मुस्लिम विद्वान रामायण को उर्दू में लिखता है, जब हिंदू-मुस्लिम साहित्यकार मिलकर उसका वाचन करते हैं और जब अलग-अलग धर्मों के लोग एक साथ बैठकर उसे सुनते हैं, तब सद्भाव केवल विचार नहीं रहता, बल्कि जीवन का हिस्सा बन जाता है।

मौलवी बादशाह हुसैन खां राना की उर्दू रामायण इसी साझा विरासत का जीवंत प्रमाण है। यह बीकानेर की माटी की वह सौंधी खुशबू है, जो बताती है कि भाषा, धर्म और आस्था की विविधताओं के बावजूद मनुष्यता का रिश्ता सबसे बड़ा होता है। रामकथा को उर्दू में रचने वाले मौलवी साहब और आज तक उसे जीवित रखने वाले साहित्यकारों का यह प्रयास आने वाली पीढ़ियों को यही संदेश देता रहेगा कि साहित्य और संस्कृति की सबसे बड़ी शक्ति लोगों को जोड़ना है, तोड़ना नहीं।

–राजेन्द्र जोशी,
शिक्षाविद-साहित्यकार,
लेखक हिन्दी- राजस्थानी भाषा के साहित्यकार है।

दीपावली: तीन युग, तीन कथाएं और एक जीवंत सभ्यता

श्री अरविंद का चिंतन और भारतीय सभ्यता की निरंतरता



सूर्य प्रताप सिंह राजावत

दीपावली क्यों मनाएँ? आज की उलझनों के सामने यह प्रश्न स्वाभाविक है। क्या दीपावली केवल एक धार्मिक पर्व है, पीढ़ियों से चली आ रही परंपरा है, अथवा अपनी सभ्यता के इतिहास, दर्शन और सांस्कृतिक चेतना को समझने का अवसर? आधुनिकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के युग में युवा परंपराओं के पीछे का तर्क जानना चाहते हैं। इस प्रश्न का उत्तर दीपावली से जुड़ी कथाओं और भारतीय सभ्यता की प्रकृति को समझने में निहित है।

भारतीय सभ्यता की ऐतिहासिक यात्रा को समझने के लिए कभी-कभी पैलिम्प्सेस्ट का रूपक प्रस्तुत किया जाता है। पैलिम्प्सेस्ट ऐसी प्राचीन पांडुलिपि होती है, जिस पर पुरानी लिखावट मिटाकर नई लिखावट अंकित की जाती थी, फिर भी पहले के लेखन के चिह्न शेष रहते थे। इस रूपक के माध्यम से भारतीय इतिहास को विभिन्न कालखंडों के विचारों, सांस्कृतिक प्रभावों, प्रवासों और ऐतिहासिक घटनाओं की परतों के रूप में समझने का प्रयास किया जाता है। हालाँकि, इस दृष्टिकोण की एक ऐसी व्याख्या भी सामने आती है, जिसमें भारत को विभिन्न प्रवासों और आक्रमणों से बनी सांस्कृतिक परतों का समूह मान लिया जाता है। इस विचारधारा के अनुसार, भारत की अपनी कोई स्वतंत्र, मौलिक सांस्कृतिक पहचान नहीं है; उसकी संस्कृति विभिन्न बाहरी प्रभावों का परिणाम मात्र है। ऐसी धारणा भारत की सभ्यता को एक धर्मशाला की तरह प्रस्तुत करती है, जहाँ विभिन्न समुदाय आते रहे और अपनी छाप छोडते रहे। लेकिन क्या भारतीय संस्कृति को केवल प्रवासों और आक्रमणों के परिणाम के रूप में समझा जा सकता है? क्या उसकी अपनी कोई मौलिक चेतना, विचार-परंपरा और सृजनशील शक्ति नहीं रही है?

श्री अरविंद का सांस्कृतिक चिंतन इन प्रश्नों पर गहराई से विचार करने की प्रेरणा देता है। अपनी पुस्तक भारतीय संस्कृति के आधार में वे भारतीय मानस की आध्यात्मिकता, जीवनशक्ति और बौद्धिकता को उसकी विशिष्ट पहचान के रूप में रेखांकित करते हैं।वे लिखते हैंकिआध्यात्मिकता निस्संदेह भारतीय मानस की मूल कुंजी है; अनंत का बोध इसकी सहज प्रकृति है किन्तु आध्यात्मिकता स्वयं पृथ्वी पर शून्य में विकसित नहीं होती, ठीक वैसे ही जैसे हमारे पर्वतों की चोटियाँ किसी स्वप्निल जादू के प्रभाव से बादलों में से बिना किसी आधार के नहीं उठ खडी होतीं। जब हम भारत के अतीत पर दृष्टि डालते हैं, तो इसके बाद जो बात हमें सबसे अधिक प्रभावित करती है, वह है उसकी अद्भुत जीवनशक्ति, जीवन के प्रति उसकी अक्षय ऊर्जा और आनंद की अनुभूति तथा उसकी अकल्पनीय रूप से विपुल सृजनशीलता। प्राचीन भारतीय आत्मा की तीसरी शक्ति थी उसकी प्रबल बौद्धिकता-जो एक साथ तपस्वी और समृद्ध, सुदृढ और सूक्ष्म, शक्तिशाली और कोमल, सिद्धांतों में व्यापक तथा विवरणों के प्रति जिज्ञासु थी।

श्री अरविंद का यह विचार स्पष्ट करता है कि भारतीय आध्यात्मिकता किसी आधारहीन अवधारणा का नाम नहीं है। उसका विकास एक समृद्ध जीवन-दृष्टि, व्यापक बौद्धिक परंपरा और असाधारण सृजनशीलता के साथ हुआ है। इसी संदर्भ में गोविंद चंद्र पांडे का विचार भी उल्लेखनीय है। वे लिखते किभारतीय संस्कृति न तो सदियों के दौरान घटित हुई मात्र आकस्मिक घटनाओं का परिणाम है और न ही प्रवासों एवं आक्रमणों की परत-दर-परत लिखी गई कोई पैलिम्प्सेस्ट मात्र। अपने सारतत्त्व में यह उन आधारभूत विचारों का विकास है, जिन्होंने एक सृजनात्मक आधारभूमि का निर्माण किया है। इसके बदलते हुए ऐतिहासिक स्वरूपों के पीछे सृजनशीलता का एक गहन और निरंतर प्रवाह विद्यमान है, जिसका चरित्र आध्यात्मिक है।

इस दृष्टि से भारतीय सभ्यता की निरंतरता का अर्थ अतीत को ज्यों का त्यों दोहराना नहीं, बल्कि उसके मूलभूत आदर्शों को प्रत्येक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप नए रूपों में अभिव्यक्त करना है। यही विचारयुगधर्म की अवधारणा से भी जुड़ता है। प्रत्येक युग की चुनौतियाँ अलग होती हैं, इसलिए सत्य, धर्म, न्याय और लोककल्याण जैसे मूल्यों की अभिव्यक्ति भी समयानुसार बदल सकती है। भारतीय पुनर्जागरण का वास्तविक अर्थ केवल अतीत का गौरवगान नहीं, बल्कि उसकी चिरंतन चेतना को वर्तमान जीवन में रचनात्मक रूप से प्रकट करना है।

दीपावली से जुड़ी विभिन्न परंपराएँ भारतीय सांस्कृतिक स्मृति की विविधता और गहराई को समझने का अवसर देती हैं। सतयुग, त्रेतायुग और द्वापरयुग से संबंधित तीन प्रमुख कथाएँ समृद्धि, धर्म और स्वतंत्रता के अलग-अलग आदर्शों को सामने लाती हैं।

1. **सतयुग:** समुद्र मंथन और माँ लक्ष्मी का प्राकट्यय-हिंदू धर्मग्रंथों में वर्णित समुद्र मंथन से माँ लक्ष्मी का प्राकट्यय समृद्धि, ऐश्वर्य और कल्याण का प्रतीक है। दीपावली पर लक्ष्मी-पूजन की परंपरा आर्थिक संपन्नता के साथ शुभता और मंगल की कामना भी व्यक्त करती है।

2. **त्रेतायुग:** श्रीराम की अयोध्या वापसी-रामायण की परंपरा के अनुसार, चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण के अयोध्या लौटने पर लोगों ने दीप जलाकर प्रसन्नता व्यक्त की। यह प्रसंग धर्म की पुनर्स्थापना, आशा और अन्याय पर न्याय की विजय का प्रतीक बन गया।

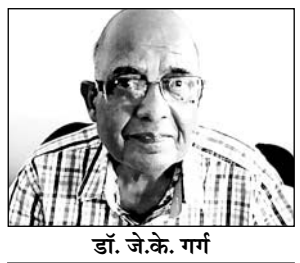
3. **द्वापरयुग:** श्रीकृष्ण की नरकासुर पर विजय-नरक चतुर्दशी की परंपरा श्रीकृष्ण की नरकासुर पर विजय से जुड़ी है। इस आख्यान का केंद्रीय भाव अत्याचार का अंत और बंदियों की मुक्ति है। यह स्वतंत्रता, मानवीय गरिमा तथा अन्याय के प्रतिरोध का संदेश देता है।

इन कथाओं के युग-संबंधी विवरण धार्मिक परंपराओं का हिस्सा हैं। इनका महत्त्व उन मूल्यों में भी है, जिन्हें भारतीय समाज ने पीढ़ियों तक इनके माध्यम से संप्रेषित किया है। इन तीनों कथाओं में समृद्धि, धर्म और स्वतंत्रता के अलग-अलग आदर्श दिखाई देते हैं। परंपरा का जीवंत होना तभी संभव है, जब वह वर्तमान से संवाद करे। अतीत को समझना आधुनिकता से विमुख होना नहीं है; बल्कि वह वर्तमान की समस्याओं का सामना करने के लिए नैतिक और बौद्धिक आधार प्रदान कर सकता है। दीपावली का उत्सव इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि उसके संदेश आज के जीवन में नए अर्थ ग्रहण कर सकते हैं। समृद्धि के साथ विवेक, शक्ति के साथ मर्यादा और स्वतंत्रता के साथ उत्तरदायित्व-ये मूल्य किसी एक युग तक सीमित नहीं हैंयुवा पीढ़ी के सामने चुनौती परंपरा और आधुनिकता में से किसी एक को चुनने की नहीं, बल्कि दोनों के बीच सार्थक संवाद स्थापित करने की है। किसी परंपरा को समझे बिना उसका पालन करना उसे औपचारिकता बना सकता है; वहीं, उसके ऐतिहासिक और दार्शनिक संदर्भों को जाने बिना उसे अप्रासंगिक मान लेना भी उचित नहीं। दीपावली युवाओं को प्रश्न पूछने, अपनी सांस्कृतिक विरासत के स्त्रोतों को जानने और उसके मूल्यों को समकालीन जीवन से जोड़ने का अवसर देती है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी समझ और विवेक के आधार पर इन परंपराओं से संवाद कर सकता है। भारत का वास्तविक पुनर्जागरण अतीत की नकल करने में नहीं, बल्कि उसकी चिरंतन चेतना को प्रत्येक युग में नए विचारों, नए संकल्पों और नई सृजनशीलता के साथ अभिव्यक्त करने में निहित है। दीपक प्राचीन हो सकता है, लेकिन उसका प्रकाश हर युग को नई दिशा दे सकता है। यही दीपावली का संदेश है-अपनी जड़ों को जानिए, अपनी सभ्यता को समझिए और उसके भविष्य के सृजनकर्ता बनिए।

शुभ दीपावली!

–सूर्य प्रताप सिंह राजावत,
उपाध्यक्ष, श्री अरविंद सोसाइटी,
राजस्थान राज्य समिति

माता लक्ष्मी की स्थाई कृपा प्राप्त करने का अचूक इलाज



डॉ. जे.के. गर्ग

दीपावली के पावन पर्व सौभाग्य धन,सम्पन्नता,सुख खुशी की कामना रखने वाले सभी व्यक्ति माता लक्ष्मी जी पूजा अर्चना और आराधना श्रद्धा के साथ करते हैं। साधारणतया हम अपने-अपने घरों की बाहरी सफाई करते हैं रंग रोशन भी करवाते हैं, घरों को सजाते भी हैं।

हम दीपावली पर अपने आप से सवाल पूछें क्या हमारा दिल सभी अवगुणों यानी क्रोध, ईर्ष्या, लोभ, लालच, असीमित इच्छा, घृणा, राग-द्वेष छल-कपट से मुक्त है? अधिकांश लोगों की अंतरात्मा से यही आवाज आयेगी-नहीं-नहीं। क्योंकि कमोपेश इनमें बहुत से दुर्गुण हमारें दिलों में मोजूद हैं। याद रखिये जब तक हम अपनी आत्मा एवं दिल को इन दुर्गुणों से मुक्त नहीं करंगे माँ मोक्ष लक्ष्मी हमारे घर मे प्रवेश नहीं करेगी । यह मान कर चले जिस दिन हमने अपनी आत्मा और -दिल को इन दुर्गुणों से मुक्त कर लिया उसी क्षण से माँ मोक्ष लक्ष्मी आप के घर मे सदेव के लिए निवास करेंगी ओर आपका घर परिवार हमेशा धन सम्पदा खुशियों के हजारो दीपों से रोशन होगा।

माँ लक्ष्मी उन्हें पसंद करती है जो रचनात्मक सोच रखते है, जिनके पास एक कार्य योजना है, सब के सहयोग से काम करते हैं, सभी की मदद करते है, खुद खुश रहते हैं और अन्य को भी खुशी देते हैं, अच्छे काम और दूसरे की भलाई के लिए प्रयास करते हैं। गरीबों की मदद करते हैं, किसी भी उपेक्षा ओर अपमान नहीं करते हैं और ना ही किसी से कोई अपेक्षा रखते हैं और जीवन में हुए हर परिवर्तन को दिल से स्वीकार करते है। किसी भी उपेक्षा ओर अपमान नहीं करतें हैं, सच सुनते हैं, सच बोलते हैं तथा हमेशा मीठी वाणी